ग्रामीण भारत में शक्ति संरचना तथा नेतृत्वः एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

–डॉ. पवन कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव किसान पी.जी. कालेज,
बभनान, गोण्डा

ग्रामीण भारत में शक्ति संरचना प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण भूमिका में रहा है। सत्ता द्रव्य की भाँति किसी भी समाज के आर्थिक व्यवस्था और एकीकरण का आधार होता है। पारसन्स के अनुसार, सत्ता सामान्य प्रकार की क्षमता है जो किसी सामूहिक व्यवस्था में अनेक इकाइयों से उनके भूमिकाओं को बलपूर्वक करता है। इसी क्रम में मैक्सवेबर ने लिखा है कि शक्ति को एक व्यक्ति अथवा अनेक व्यक्तियों द्वारा अपनी इच्छाओं को दूसरों पर क्रियान्वित करने अथवा दूसरे व्यक्ति द्वारा विरोध करने पर भी उसे पूर्ण कर लेने की स्थिति को कहते हैं। मैकियावली ने सत्ता प्रारूप की व्याख्या करते हुए इसको व्यक्ति से सम्बन्धित बताया है कि व्यक्ति अपनी सत्ता को कैसे बनाया रखता है और उसको कैसे बढ़ाता है। उनके अनुसार सत्ता स्वयं में व्यक्ति के लिए लक्ष्य होती है। डॉ. योगेन्द्र सिंह[1] ने अपने लेख रूरल सोशियोलॉजी इन इण्डिया में पूर्वी उत्तर प्रदेश के छः गांवों का अध्ययन कर यह उल्लेख किया कि ग्रामीण सत्ता संरचना में गांव के परम्परागत उभरते हुए नेतृत्व का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि जब एक उभरते हुए नेताओं की भूमिकाओं का मूल्यांकन नहीं करेंगे तब तक शक्ति संरचना का अध्ययन अधूरा रह जाता है।

बैजनाथ सिंह ने सामुदायिक विकास खण्ड योजनाओं के प्रभाव का अध्ययन करते हुए ग्रामीण नेतृत्व एवं शक्ति संरचना का विश्लेषण किया। उनके अनुसार भूमि सुधार, शिक्षा, प्रजातंत्रीकरण के फलस्वरूप नये प्रकार के नेतृत्व का जन्म हो रहा है। सत्ता की अवधारणा में ग्रामीण अभिजात वर्ग की अवधारणा आती है वह अभिजात वर्ग ग्रामीण भारत में परिवर्तन के मुख्य आधार हैं। ग्रामीण शक्ति संरचना में अभिजात वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण है।

ग्रामीण भारत में शक्ति संरचना

ग्रामीण भारत में शक्ति संरचनाओं को समझने के लिए तीन मुख्य विशेषताओं का विश्लेषण करना आवश्यक है –

1. सत्ता, व्यक्ति अथवा समूह की एक प्रकार की क्षमता है जो समुदाय के निर्णयों को प्रभावित करता है और अपने पक्ष में इसको करने के लिए बाध्य करता है।
2. शक्ति एक विकल्प वाला तत्व है और एक व्यक्ति जितनी सत्ता अपने में रखता है यह उसके व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक गुणों पर निर्भर करता है इसीलिए कुछ व्यक्ति अधिक प्रभावशाली होते हैं और कुछ कम।
3. ग्रामीण भारत के शक्ति संरचना में व्यक्तियों और समूहों का उच्च और निम्न स्थान समुदाय के सामाजिक संरचना के आधार पर निर्भर करता तथा बनता है।

परम्परागत शक्ति संरचना

परम्परागत शक्ति संरचना से तात्पर्य यह है कि जमींदारी उन्मूलन के पहले गांवों में किस प्रकार के सामाजिक सम्बन्ध पाये जाते थे क्योंकि शक्ति संरचना के प्रतिमान जमींदारी उन्मूलन के पहले आधुनिक शक्ति संरचना से भिन्न थी। परम्परागत शक्ति संरचना का विश्लेषण निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता है –

1. **जमींदारी व्यवस्था –** जमींदारी व्यवस्था गांव के प्रशासनिक और आर्थिक हितों का देख–रेख करता था। भूमि सम्बन्धी नियम ये जमींदार लोग किसानों को देते थे और उनसे अनेक कार्य लेते थे और मालगुजारी भी लेते थे। इस प्रकार जमींदार और काश्तकार का एक प्रकार का सम्बन्ध था। इस तरह से जमींदारों के हाथों में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सत्ता थी।
2. **पुरोहित वर्ग –** दूसरा परम्परागत शक्तिशाली समूह ब्राहम्णों का था जो पुरोहित के रूप में कार्य करते थे, इनके हाथ में भी सत्ता थी। दूसरा समूह बनियों का था जो धन के बल पर शक्तिशाली था। ब्राहम्ण लोग अनेक त्योंहारों पर पूजा करते थे और जातियों में सबसे ऊँचा होने के नाते इनके पास एक नैतिक सत्ता थी जो अन्तर्जातीय दूरी को बनाये रखने के लिए अनेक धार्मिक नियम बनाते थे। इस प्रकार से ब्राहम्णों के पास अधिक सत्ता थी। बनिया लोग अपनी इच्छा आर्थिक स्थिति के आधार पर जमींदारों से सम्बन्ध रखते थे और जमींदारों से सम्बन्धित वस्तुओं की पूर्ति करते थे।
3. **जाति पंचायत –** जाति पंचायत गांवों में अनेक होती थी और यह जाति के स्तर पर सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अधिक प्रभाव डालती थी। यह अपने जातियों के सदस्यों के व्यवहारों को नियंत्रित करती थी। जातियों के पंच अनेक विषयों पर निर्णय लेते थे।
4. **गांव पंचायत –** गांव पंचायत में अनेक जाति के प्रतिष्ठित और वृद्ध व्यक्ति होते थे। जब गांव के विषय में कोई समस्या आती थी तब सब लोग एकत्र होकर निर्णय लेते थे। जैसे – चारागाह, पीने का पानी, तालाबों और कुंओं के सुधार आदि पर ये अपनी राय देते थे। जाति पंचायतें और ग्राम पंचायतें उतनी शक्तिशाली नहीं थीं जितना अन्य प्रकार की परम्परागत शक्ति संरचनाएं थीं परन्तु जाति पंचायत कुछ विशेष सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में प्रभावशाली थीं।

आधुनिक ग्रामीण शक्ति संरचना

परम्परागत ग्रामीण शक्ति संरचना बदली है और इसके स्थान पर आधुनिक शक्ति संरचना दिखलायी पड़ रही है। सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से लोग इसे क्रांतिकारी बदलाव कहते हैं। ग्रामीण शक्ति संरचना का आरम्भ स्वतंत्रता आन्दोलन से हुआ इस आन्दोलन में मध्यम और निम्न जातियों में एक नयी आशा की किरण दिखायी दी और ये जातिया अपने भविष्य के बारे में एक सुनहरे भविष्य की कल्पना करने लगे।

मध्यम और निम्न जातियां बहुधा उच्च जातियों का विरोध करती रही हैं और यह विरोध हमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में मिलता है। अब पंच और अन्य राजनैतिक स्थितियों के लिए जातियों के साथ–साथ निम्न जातियां भी प्रतिस्पर्धा में आ गयी हैं। गांव के प्रधान, ग्राम सभा सदस्य के चुनाव में निम्न जातियां भी भागीदारी कर रही हैं।

प्रभावशाली व्यक्ति

गांव के शक्ति संरचना में अनेक जातियों के प्रसिद्ध तथा प्रभावशाली व्यक्ति सत्ता समूह के रूप में प्रभाव डाल रहे हैं। यह अनेक पंचायती संस्थाओं से सम्बन्धित है। इनको तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है –

1. वर्तमान पंचायती और अन्य संस्थाओं से सम्बन्धित व्यक्ति।
2. परम्परागत संस्थाओं से सम्बन्धित व्यक्ति जैसे लम्बरदार या मुखिया आदि।
3. ऐसे व्यक्ति जो प्रभावशाली हैं परन्तु किसी संस्था से सम्बन्धित नहीं है। इन लोगों के प्रभावशाली होने का कारण व्यक्तिगत योग्यता सामाजिक स्थिति तथा राजनैतिक स्थितियाँ हैं।

ग्रामीण अंचलों में जो लोग शिक्षित हैं उनके पास भी सत्ता है। जिला पंचायत, क्षेत्र पंचायत, ग्राम प्रधान तथा ग्राम सभा सदस्य के लिए चुनाव लड़ते हैं। ऐसे व्यक्ति जो अपनी योग्यता के आधार पर लोगों द्वारा आदर और सम्मान पाते हैं वे भी प्रभावशाली माने जाते हैं।

आर्थिक स्थिति तथा राजनैतिक संरचना

ऐसा देखा जा रहा है जो लोग गांव में आर्थिक रूप से सम्पन्न हैं, जिनकी उच्च जाति है उनकी उच्च आर्थिक स्थिति भी है। ऐसे लोग भी सत्ता संरचना में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। आज के राजनीतिक संरचना में भागीदारी अनेक दृष्टिकोण से की जा रही है। इनमें से कुछ निम्न है –

1. व्यक्तिगत स्वार्थ
2. सामाजिक ख्याति
3. गांव की सेवा तथा विकास
4. राजनीतिक दल के सदस्य होने के नाते

जब से प्रजातंत्री विकेन्द्रीकरण स्वतंत्रता के बाद हुआ तब से सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से प्रभावशाली समूहों की सत्ता को छोटी जातियों द्वारा चुनौती दी गयी है। ये छोटी जातियां गांव के नेतृत्व के लिए अब संघर्षमय हैं। परम्परागत ग्रामीण भारत में सत्ता, सामाजिक स्थिति तथा धन उच्च जाति के लोगों में पाया जाता था। आज कल मध्यम जातियों के लोग निम्न जातियों से मिलकर गांव की सत्ता हथिया रहे हैं।

प्रभावशाली जाति

श्रीनिवास[2] का कहना है कि ग्रामीण शक्ति संरचना में प्रभावशाली जाति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने प्रभावशाली जातियों की निम्नलिखित विशेषताएं बताई हैं –

1. अधिक भूमि पर स्वामित्व
2. गांवों में अन्य जातियों की अपेक्षा अधिक संख्या
3. स्थानीय ग्रामीण व्यवस्था में उच्च स्थान

प्रभावशाली जातियां संस्कृति का आदान–प्रदान भी करती हैं और साथ ही साथ उनको फैलने में अवरोध का कार्य भी करती हैं। ग्रामीण शक्ति संरचना में अभिजात वर्ग का भी स्थान है और ये अभिजात वर्ग एक प्रकार के सामाजिक आर्थिक वर्ग हैं।

एस0सी0 दुबे[3] ने प्रभावशाली व्यक्ति की अवधारणा प्रतिपादित की है। उनका कहना है कि प्रभावशाली जाति का सामाजिक संरचना में उतना महत्व नहीं रह गया है जितना कि

प्रभावशाली व्यक्ति का। आंद्रे बेत्तई[4] ने गांव के शक्ति संरचना का विश्लेषण अपने एक अध्ययन के आधार पर किया है और उनका कहना है कि परम्परागत शक्ति संरचना का आधार उच्च जाति के ब्राहम्ण थे, जो जमींदार भी थे, परन्तु भूमि सुधार और हरित क्रांति के बाद मध्यम और निम्न जातियां नये ढंग से अर्जित धन और अधिक जनसंख्या के आधार पर सत्ता को हथिया रहे हैं।

ग्रामीण शक्ति संरचना

क्रमांक	लक्षण	परम्परागत	वर्तमान
1.	**शक्ति का केन्द्र**	गांव का मुखिया	ग्राम प्रधान
2.	**शक्ति का स्वरूप**	राजसी	प्रजातंत्र
3.	**शक्ति का स्रोत**	जन्म के आधार पर अथवा नामित	चुनाव के आधार पर
4.	**नेतृत्व**	तानाशाही	प्रजातंत्रीय
5.	**शक्ति का स्रोत**	प्रशासक तथा राजा	जनता
6.	**शक्ति से सम्बन्धित संस्थाएँ**	गांव समिति	कानून के आधार पर गठित ग्राम पंचायत
7.	**संस्थाओं के लक्ष्य**	शासन करना तथा प्रभुत्व स्थापित करना	गांव का विकास

उभरती हुई ग्रामीण शक्ति संरचना और उसका भविष्य

जाति और सम्पत्ति आज की ग्रामीण शक्ति संरचना के मुख्य आधारों में से है। जाति का प्रभाव धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं महत्वपूर्ण है बल्कि किसी गांव में किसी जाति की जनसंख्या कितनी है उस पर उसकी शक्ति निर्भर करती है।

कार्ल मार्क्स ने शक्ति संरचना को उत्पादन की शक्तियों से जोड़ा है। जैसे–जैसे ग्रामीण अंचलों में आधुनिकीकरण का प्रवेश होगा और प्रजातंत्रीकरण शक्तिशाली होगा उसके फलस्वरूप एक नये प्रकार के नेतृत्व का जन्म होगा और शक्ति संरचना में परिवर्तन आयेगा। जब से एक व्यक्ति एक वोट की राजनीति आयी है, तब से बड़े और छोटे के बीच अन्तर धीरे–धीरे समाप्त हो रहा है और नये प्रकार के नेतृत्व के जन्म की पृष्ठभूमि बन रही है।

अनेक अध्ययनों के आधार पर ग्रामीण शक्ति संरचना के बारे में कुछ मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. परम्परागत रूप से गांव की शक्ति संरचना और नेतृत्व उच्च जातियों के हाथ में था उनके पास उच्च सामाजिक स्थिति थी क्योंकि वे धन और सम्पत्ति के आधार पर उच्च सामाजिक स्थिति प्राप्त किये थे। इस तरह से जाति, आर्थिक स्थिति और शक्ति का समन्वय था।
2. भूमि सुधार और जमींदारी उन्मूलन से शक्ति समूहों में परिवर्तन आया है और इसके फलस्वरूप मध्यम तथा निम्न जातियां, भूमिधर के रूप में विकसित हुए और गांवों के शक्ति संरचना में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये हैं।
3. ग्रामीण शक्ति समूह वर्तमान युग में सत्ता प्राप्त करने के प्रलोभन में फंसे हैं और गांव के विकास में उनकी रूचि नहीं है।

4. गांव में प्रजातंत्रीय संस्थाएं जैसे – गांव पंचायत, सामुदायिक विकास खण्ड योजनाओं का लाभ केवल शक्तिशाली समूहों को ही मिला है और उन्होंने अपनी धार्मिक और सामाजिक स्थिति मजबूत की है।
5. गांव में जहाँ पढ़े–लिखे नवयुवक नेतृत्व को संभाल रहे हैं, वहाँ परिवर्तन और विकास की किरण देखने को मिल रही है।

ग्रामीण नेतृत्व

समाज की शक्ति संरचना में नेतृत्व का प्रमुख स्थान है और नेतृत्व एक सर्वव्यापी तथ्य है। मानव एक सामाजिक प्राणी है जो समूह में भागीदारी करता है और अपना तथा समूह के विकास के लिए पथ प्रदर्शक की आवश्यकता होती है। इस कार्य को नेता बहुत पहले से ही करते आ रहे हैं, चाहे धार्मिक क्षेत्र को लें, चाहे राजनैतिक क्षेत्र को लें। प्राचीन काल से आज तक के समाजों का विकास और उत्थान समाज के नेता से ही हुआ है। एक नेता वह व्यक्ति होता है जो समूह और व्यक्तियों को अंधकार से जागृति की ओर ले जाता है और पिछड़ेपन से विकास की ओर अग्रसर करता है। इस तरह से नेतृत्व एक सामाजिक या मनोवैज्ञानिक तथ्य है जिसे प्राचीन काल से ही हम समाज में पाते हैं, चाहे वह आदिम समाज हो या आधुनिक समाज हो किसी भी समाज में साधारण जनता पथ प्रदर्शक का कार्य नहीं करती बल्कि इस कार्य को नेता ही करते हैं। भारत वर्ष में स्वतंत्रता के बाद आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक जीवन में नेता का महत्व बहुत बढ़ा है। स्वतंत्रता के बाद पंचायती राज को प्रकार्यवादी या व्यावहारिक बनाया गया और गांव वालों की भागीदारी इसमें बनायी गयी। किसी भी समाज की शक्ति संरचना की सफलता उसके नेता पर निर्भर करती है।

पार्क एवं टिंकर[5] ने नेतृत्व के बारे में लिखा है कि नेता एक मार्गदर्शक, एक चालक, एक मुखिया, दल का श्रेष्ठ व्यक्ति होता है जो समाज को आगे ले जाता है। टीड[6] का कहना है कि नेतृत्व किसी विशेष लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सामूहिक स्तर से लोगों से प्रयास करता है। स्पष्ट है कि नेतृत्व के अन्तर्गत किसी व्यक्ति की वह क्रियाएं आती हैं जो दूसरे व्यक्तियों पर प्रभाव डालकर उनको किसी दिशा में करने के लिए बाध्य करती हैं। इस तरह से नेता में सत्ता होती है। वह सत्ता अपने सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति और व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर प्राप्त करता है और उसमें क्षमता होती है कि जनता को संगठित करके निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता है। भारत में स्वतंत्रता के पहले नेतृत्व का स्वरूप परम्परागत था।

हेनरी आरेनस्टीन[7] ने अपने लेख लीडरशिप एण्ड कास्ट इन ए बाम्बे विलेज में गांवों में पाये जाने वाले नेतृत्व को औपचारिक और अनौपचारिक दो भागों में बांटा है। अनौपचारिक नेता का विभाजन उन्होंने स्वीकृत नेता और अस्वीकृत नेता में किया है। पुनः स्वीकृत नेता को सक्रिय नेता तथा निष्क्रिय नेता में विभाजित किया है। इकबाल नारायण[8] के अनुसार, स्वतंत्रता के बाद एक प्रकार्यवादी का जन्म हुआ जिससे गांवों में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि गांव की बदली है और आज के गांव का नेता या अभिजात वर्ग आज के परम्परागत नेता से भिन्न है। जब हम नेता की बात करते हैं तो हम अपने को नेता के राजनैतिक क्षेत्र से सम्बन्धित रखते हैं और एक नेता समाज के अन्य लोगों पर किस प्रकार प्रभाव डालकर नियंत्रण करता है। साथ ही

उसके समर्थक कितने हैं। इकबाल नारायण ने नेतृत्व के निम्नलिखित तथ्यों का उल्लेख किया है –

1. ग्रामीण भारत में आज की शिक्षा नेतृत्व के विकास में बहुत महत्व नहीं रखती है।
2. गांवों में नेता वही लोग होते हैं जिनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति ऊँची होती है।
3. नेतृत्व गांवों में आयु के आधार पर चला आ रहा है।
4. ग्रामीण नेता राजनीतिक अधिक होते हैं और अपना विकास अधिक करते हैं और दूसरे का कम।

इस प्रकार से गांवों पर जितने अध्ययन हुए है वह प्रायः परम्परागत प्रतिमानों के आधार पर किये गये हैं। पहले ब्राहम्ण, जमींदार, जागीरदार किस प्रकार गांव में नेतृत्व कर रहे थे। स्वतंत्रता के बाद भारतीय गांवों को यातायात के साधनों से जोड़ा गया, गांवों में उद्योग का विकास आरम्भ किया गया और उत्पादन की विधि बदली, आर्थिक संरचना परिवर्तन की ओर अग्रसर हुआ, समानता का अधिकार मिला, जिससे सबको समान शिक्षा प्राप्त होने लगी और हर व्यक्ति को 18 वर्ष की आयु में मत देने का अधिकार मिला। इन सभी परिवर्तनों के फलस्वरूप गांवों के नेतृत्व में भी काफी परिवर्तन हुआ है।

आस्कर लेविस[9] ने अपने अध्ययन विलेज लाइफ इन नार्दन इण्डिया में विकास कार्यक्रमों के प्रवेश में नेतृत्व के महत्व को देखा कि ग्रामीण विकास में ये नेता कितनी महत्वपूर्ण भूमिका में हैं। योगेन्द्र सिंह[10] ने बस्ती जिले के डुमरियागंज तहसील के छः गांवों का अध्ययन कर ग्रामीण नेतृत्व के उभरते प्रतिमानों पर प्रकाश डाला है। बी0एन0 सिंह ने उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के नेकरीकला गांव में ग्रामीण नेतृत्व का अध्ययन किया और कहा कि सामुदायिक विकास खण्ड योजनाओं के फलस्वरूप एक नया युवा वर्ग नेतृत्व को संभाल रहा है जिसमें कुछ और कारक हैं जैसे – भूमि सुधार, नयी शिक्षा, प्रजातंत्रीकरण। ये सब कुछ ऐसे कारक हैं जो युवा वर्ग को नेतृत्व को बागडोर संभालने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। गांवों के अवलोकन से पता चलता है कि ग्रामीण नेतृत्व का परम्परागत रूप अब बदल रहा है।

एम0एन0 श्रीनिवास और एस0सी0 दुबे ने ग्रामीण नेतृत्व के अध्ययन में विशेष योगदान दिया है। श्रीनिवास[11] ने प्रभुजाति की अवधारणा प्रतिपादित की। उनका कहना है कि ग्रामीण नेतृत्व को समझने के लिए प्रभावशाली जाति के आधार पर विश्लेषण किया जाना चाहिए क्योंकि प्रभावशाली जाति गांव के समुदाय को चलाने में प्रकार्यवादी भूमिका अदा करती है और साथ ही निम्न जातियों के लिए संदर्भ समूह का कार्य करती है। वहीं एस0सी0 दुबे[12] का कहना है कि प्रभावशाली जाति की अवधारणा आज के गांव के नेतृत्व में प्रासंगिक नहीं रह गया है क्योंकि आज के गांवों में व्यक्तिगत आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक स्थिति तथा क्षेत्र में उसका प्रभाव देखा जाता है। इस आधार पर दुबे का कहना है कि प्रभावशाली व्यक्ति ही गांव में नेतृत्व करते हैं। आंद्रे बेत्तई के अनुसार, गांवों में जो परम्परागत रूप था वह अब परिवर्तित हो रहा है। ब्राहम्ण, जमींदार ये सब नेतृत्व का कार्य करते थे। अब इनमें परिवर्तन आया है। भूमि सुधार, उन्नत बीज, रासायनिक खाद, उत्पादन में वृद्धि आदि कारणों से गांवों में मध्यम वर्ग का उभार हुआ है। फलस्वरूप गांवों में पिछड़ी जातियों तथा अनुसूचित जातियों के लोग आर्थिक रूप से सम्पन्न हो रहे हैं और वर्तमान में नेतृत्व के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

संदर्भ :

1. Yogendra Singh, The Changing Power Structure of Village Community, 1961
2. M.N.Srinivas, The Social Structure of a Mysore Village, Economic & Political Weekly, Vol. 3, Issue No. 42-43, 30 Oct, 1951, ISSN (Print) - 0012-9976 | ISSN (Online) - 2349-8846
3. S.C. Dube, Indian Village, London R.K. Paul Ltd., 1955
4. Andre Beteille, Caste, Class and Power – Changing Patterns of Stratification in a Tanjore Village, Barkeley and Los Angle, University of California Press, 1965
5. Richard L Park and Irene Tinker, Leadership and Political Institution in India, Princeton, N.J., Princeton University Press, 1959
6. Ordway Tead, The Art of Leadership, Whittlesey House, McGraw-Hill Book Company, Incorporated, 1985
7. Henry Orenstein, Leadership and Caste in a Bombay Village, University of California, Berkeley, 1957
8. Iqbal Narain, K. C. Pande, Mohan Lal Sharma, Rural Elite in Indian State, Manohar Book Service, 1976
9. Oscar Lewis, Village Life in Northern India: Studies in a Delhi Village, University of Illinois press 1958 / Vintage 1965
10. Yogendra Singh, Modernisation of Indian Tradition, Rawat Publishers, Jaipur, 1986
11. M.N. Srinivas, Caste in Modern India and other Essay, Asia Publishing House, Bombay, 1960
12. S.C. Dube, Indian Village, London R.K. Paul Ltd., 1955